शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –05-07

सिनेमा और कमलेश्वर: एक साहित्यिक यात्रा

डॉ. गीतु दास
असिस्टेंट प्रफेसर- हिन्दी विभाग
Poovannanvilayil,
Kannankuzhy Po Kannankuzhy Mavelikara, Alappuzha – 690505 **Mob No** – 7902939638
Mail ID- geethudas502@gmail.com **ORCHID ID** - 0009-0004-0075-8775

Received- 07 April 2026
Accepted– 08May 2026
Published– 30June 2026
Corresponding Author-
डॉ. गीतु दास—असिस्टेंट प्रफेसर,हिन्दी विभाग
Poovannanvilayil, Kannankuzhy Po Kannankuzhy Mavelikara, Alappuzha-690505 Mob– 7902939638
Mail ID- geethudas502@gmail.com

DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041402

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

शोध सार - कमलेश्वर हिंदी कथा जगत में प्रमुख वक्ता के रूप में अवतीर्ण हुए। एक प्रगतिशील कथाकार होने के कारण उनमें जीवन की प्रतिबद्धता एवं शाश्वत मूल्यों के प्रति विद्रोह का आग्रह विद्यमान रहा है। हमारे समाज में ऐसी कई आदतें और परंपराएँ मौजूद हैं जो अज्ञानता पर आधारित हैं और हमारे समाज की प्रगति को अवरुद्ध कर दिया है। जाति व्यवस्था, छुआछूत, दहेज और पर्दा प्रथा की कठोरता से हमारे समाज को बहुत नुकसान हुआ है और यह फ़िल्में इन संकटों से लड़ने में बहुत मदद करती हैं। चूँकि उनका उपयोग अन्य बातों के अलावा, राष्ट्रीय एकता, निषेध, अंतरजातीय विवाह, परिवार नियोजन और निरक्षरता उन्मूलन को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार के विषय हमारे समाज के परिवर्तन में सहायता कर सकते हैं। कमलेश्वर ने फिल्मों के द्वारा कठोर सामाजिक यथार्थ को भी लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया। इस लेख में कमलेश्वर के उपन्यासों पर आधारित फिल्मों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
बीज शब्द – कमलेश्वर, फिल्म, इंडियन सिनेमा, दूरदर्शन, पटकथा, सामाजिक, राजनीतिक

मूल आलेख - फिल्म एक ऐसा संचार माध्यम है, जो सृजनात्मक और यांत्रिक प्रतिभा का सुंदर संगम है। सन 1826 में फोटोग्राफी का आविष्कार से ही फिल्म का भी आविष्कार हुआ। भारत में फिल्म का प्रदर्शन प्रथम बार 1896 में ल्युमियरे बंधुओ द्वारा मुंबई में हुई। सन 1931 में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनी। डॉ.तिवारी ने फिल्मों को आठ प्रकार बताया है - फीचर फिल्म, चिल्ड्रन फिल्म, न्यूज़ फिल्म, डॉक्यूमेंट्री फिल्म, टेलीविजन फिल्म, पब्लिक रिलेशन फिल्म, एडवरटाइजिंग फिल्म, इंटरवेंशनल फिल्म आदि। एक तरफ लेखन जब शिक्षित लोगों का प्रभावित करता है, तो दूसरी तरफ फिल्म शिक्षित और अशिक्षित वर्ग के लोगों के जीवन को प्रभावित करती हैं। सन 1990 के बाद आए अनेक हिन्दी सिनेमा ने विषय भर में ख्याति प्राप्त की और आम जनता की जीवन पर भी गहरा असर पड़ा। असली ज़िन्दगी पर आधारित काफी सारी फ़िल्में बन चुकी है जैसे – गंगुबाई काठियावाडी २०२२, भाग मिलका भाग २०१३, मैरी कोम २०१४, थे डर्टी पिक्चर २०११, मद्रास कैफ़े २०१३, गुलाब गंग २०१४, थे घज़ी अटाक २०१७, आदि। इसके आलावा काफी हिन्दी फिल्में बनी है जो विश्व भर में ख्याति प्राप्त की जैसे – तारे ज़मीन पर २००७, दंगल २०१६, बाहुबली २०१५-२०१७, कबाली २०१६, थ्री इडियट्स २००९ आदि। फिल्म का उपयोग लोगों को रूढ़िवादिता पर काबू पाने और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करने में मदद करने के लिए किया जा सकता है तथा हमारी संस्कृति में अज्ञानता के उन्मूलन में सहायता करने की क्षमता है। इसके अलावा, सिनेमा का उपयोग विभिन्न आवश्यक सामाजिक सुधारों को शुरू करने और लागू करने के लिए किया जा सकता है।लोगों के विचार और व्यवहार फिल्मों और कहानियों में गहराई से प्रभावित होते हैं। यह एक सुधारात्मक उपकरण के रूप में काम कर सकता है, जो मानव तस्करी, घरेलू दुर्व्यवहार, भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और अन्य भेदभावपूर्ण व्यवहार जैसी सामाजिक बुराइयों को उजागर कर सकता है। फिल्मों और अभिनेताओं ने लोगों के विचारों और कार्यों को प्रभावित किया है वे नए रुझान स्थापित करने के माध्यम हैं जिनका लोगों के सामाजिक जीवन में तत्काल परिणाम होता है। कड़वे सच को चित्रित करने के लिए, भारतीय फिल्म अन्य चीजों के अलावा हिंसा, नग्नता, नस्लीय पूर्वाग्रह, अन्याय और असमानता को बढ़ावा देने में तेजी से

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –05-07

शामिल हो गई है। एक्शन फिल्मों में अक्सर बहुत अधिक हिंसा दिखाई जाती है और युवा लोगों के दिमाग पर इसका बुरा और असंवेदनशील प्रभाव पड़ता है। कमलेश्वर और इंडियन सिनेमा का संबंध काफी पुराना है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए 'परिक्रमा' नामक कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें उन्होंने सामाजिक यथार्थ को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने लोगों के दुख-दर्द, आशा एवं निराशा का बखूबी से चित्रण किया। इसके अंतर्गत पड़े लिखे शिक्षित वर्ग एवं अनपढ़ सभी लोगों के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। इस कार्यक्रम में वह लोगों से तीखा सवाल करते हैं और सच्चाई अपने आप सामने आ जाती है। यह कार्यक्रम आम आदमी की जिंदगी की आइना के सामान थी। 'परिक्रमा' को यूनेस्को द्वारा दुनिया के 10 सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में रेखांकित किया गया। उनका द्वारा शुरू किया गया दूसरा कार्यक्रम 'दृष्टिकोण' है, जो अयोध्या से जुड़ा है, उस कार्यक्रम ने भी भारतीयों पर काफी प्रभाव डाला।

1959 में कमलेश्वर भारतीय दूरदर्शन के प्रथम स्क्रिप्ट राइटर के रूप में जानने लगे। उनका पहला साहित्य सीरियल 'दर्पण' था। इसके अलावा उन्होंने 'आकाशगंगा', 'रेत पर लिखे राम', 'बिखरे पन्ने', 'विराट', 'बेताल पच्चीसी', 'युग', 'चंद्रकांता' जैसी सीरियलों के लिए पटकथाएं लिखी। वह सन 1980 से 1982 तक भारतीय दूरदर्शन के 'एडिशनल डायरेक्टर जनरल' के रूप में भी कार्यभार संभालते रहे। उनके उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' पर आधारित 'बदनाम बस्ती' नामक फिल्म बनी, 'तलाश' कहानी पर आधारित फिल्म 'फिर भी' बनी, 'अमानुष' फिल्म के लिए संवाद लेखन किया। 'घड़ी के दो हाथ' फिल्म की पटकथा और संवाद लेखन कमलेश्वर ने किया। 'आंधी' फिल्म उनकी उपन्यास 'काली आंधी' पर बनी। 'मौसम' नामक फिल्म उनकी उपन्यास 'आगामी अतीत' पर आधारित रही है। इसके अलावा 'सारा आकाश', 'राम बलराम', 'सौतन', 'मिस्टर नटवरलाल', 'द बर्निंग ट्रेन', 'तुम्हारी कसम', 'पति पत्नी और वह' जैसी 99 फिल्मों का लेखन भी कमलेश्वर ने किया। उन्होंने फिल्मों के माध्यम से कई विषयों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर शिक्षा को व्यापक बनाने में सहायता की। उनके फिल्मों ने समाज में नैतिक कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, स्वच्छता की आवश्यकता, नागरिक भावना, महिलाओं के प्रति सम्मान और अन्य विषयों को व्यक्त करने में सहयोग दिया।

कमलेश्वर के निम्नलिखित उपन्यासों पर आधारित फ़िल्में बनायीं गई, जो अत्यंत लोगप्रिय रही एवं जनता ने उसे दहे दिल से स्वीकार्य किया –

1.एक सड़क सत्तावन गलियाँ - बदनाम बस्ती : एक सड़क सत्तावन गलियाँ उपन्यास सन 1961 में प्रकाशित हुई, जिसके आधार पर बदनाम बस्ती नामक फिल्म 1972 में प्रेमकपूर द्वारा बनायी गई लेकिन यह अनेक लोगों तक पहुँच नहीं पायी, इसी कारण फिर से री-एडिट करके 1978 में रिलीस किया गया लेकिन तभ भी इस फिल्म की ख्याति उतनी नहीं बड़ी, जिसका कारण यह हो सकता है कि उस समय के जनता को इस प्रकार के समलैंगिक फिल्मों में कोई दिलचस्पी नहीं रही। इसे भारत का पहला समलैंगिक फिल्म माना जाता है। सिनेमा में सरनाम सिंह मुख्य पात्र है जो एक डाकू होने के साथ साथ बस ड्राईवर भी है जो बासुरी को दूसरे डाकू द्वारा बलात्कार करने से बचाता है। इसी कारण बासुरी को सरनाम से प्रेम हो जाता है। किसी कारणवश वह जेल जाता है और निकलते ही बासरी को ढूँढता है पर वह कही भी नहीं मिलती। बांसुरी भी विवश होकर एक नाटक मंडली में शामिल हो जाती है।

सरनाम एक मंदिर में काम करने वाला शिवराज से मिलता है और उसे बस में क्लीनर की नौकरी देता है। शिवराज एक एसा पात्र है जो सरनाम से शारीरिक और मानसिक रूप से संबंध स्थापित करना चाहता है। वह सरनाम पर काफी निर्भर रहता है और उससे भावनात्मक एवं शारीरिक संबंध स्थापित करता है। एक दिन उसकी मुलाकात बांसुरी से होता है, तब पता चलता है कि उसका दोस्त रंगीले ने बांसुरी को गाँव के मेले में नीलामी में जीत लिया था और अब वह रंगीले के साथ रह रही है। बांसुरी सदा सरमान को उसके जीवन में लौट आने की प्रतीक्षा रखती है। लेकिन सरनाम इस बात का मानसिक द्वंत्व में रहता है कि एक तरफ वह बांसुरी को चाहता भी है और दूसरी फरफ वह शिवराज के प्रति हुए प्रेम के कारण टूट जाता है। उसके बाद शिवराज कमला से विवाह कर लेता है। रंगीले पुलिस का मुखबेर है जिसे क़ानूनी दोहरेपन के लिए दोषी ठहराया गया है और वह जेल की सज़ा मिलती है। फिल्म के अंत की और सरनाम बांसुरी और उसकी नवजात शिशु को अपने घर ले जाता है और उनको अपने दिल से अपना लेता है।

साम्य	वैषम्य
पात्रों का नाम काफी समान है	नायिका का नाम उपन्यास में बिंसरी है और फिल्म में बासुरी
उपन्यास और फिल्म के अंत में कोई बदलाव नहीं है - अंत में सारनाम बिंसरी और उसके बच्चे को साथ ले जाते हैं	फिल्म में रंगीले ने बांसुरी को गाँव के मेले में नीलामी में जीत लिया लेकिन उपन्यास में सरनाम अनजाने में बिंसरी को अपने दोस्त रंगीले के लिए खरीद लेता है।

2.काली आंधी – आँधी : 'काली आंधी' उपन्यास सन 1961 में प्रकाशित हुई, जिसके आधार पर भारतीय राजनीतिक फिल्म 'आंधी' 1975 में बनी। इस फिल्म का निर्देशन गुलज़ार ने किया और अभिनय संजीव कुमार और सुचित्रा सेन द्वारा किया गया। उस समय यह आरोप लगाया गया था कि यह फिल्म तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के जीवन और उनसे अलग हुए पति के साथ उनके संबंधों पर आधारित थी। लेकिन वास्तव में यह फिल्म राजनेता तारकेश्वरी सिन्हा और इंदिरा गांधी के जीवन से प्रेरित था। यह बिछड़े हुए जोड़े की आकस्मिक मुलाकात पर आधारित है, जहाँ जगदीश बाबू की पत्नी आरती देवी एक चुनाव अभियान के दौरान अपने पति द्वारा संचालित होटल में ठहरती हैं। आरती अब एक प्रमुख राजनीतिक नेता हैं जो किसी भी तरह जीत हासिल करना चाहती थी। फिल्म का सुखत अंत है, जब आरती देवी जीत जाती है और जगदीश बाबु और वह दोनों फिर से एक होकर रहने का निर्णय लेते है।

राष्ट्रीय आपाताल के दौरान १९७५ में फिल्म पर प्रतिबध लगाया गया। आदर्श चुनाव आचार संहिता के कथित उल्लंघन पर फिल्म पर प्रतिबंध लगाया गया था। फिल्म आम जनता के बीच इतनी प्रभावित हो गयी थी कि इसे कांग्रेज़ पार्टी की जीत पर बुरा असर पड सकता था। यह कहकर प्रतिबद्ध लगाया गया कि इससे कांग्रेस पार्टी की प्रतिष्ठा एवं इंदिरा गाँधी को नुकसान हो सकता है। प्रतिबंध

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –05-07

लगाने के कारण तुरंत ही फिल्म को राष्ट्रीय विषय बना दिया। १९७७ के कंग्रेज़ पार्टी के राष्ट्रीय चुनाव में हार के पश्चात। इस फिल्म को प्रीमियर राज्य द्वारा संचालित टेलीविजन चैनल पर रिलीस किया गया। फिल्म अभिनेताओं के करियर की एक महत्वपूर्ण फिल्म बनी जिससे उन्हें ख्यातिप्राप्त हुई। 23 वें फ़िल्मफ़ेयर अवार्ड्स में फ़िल्म ने स्वयं सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार जीता एवं संजीव कुमार ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार प्राप्त की।

साम्य	वैषम्य
नायक का नाम जगदीश बाबु और बेटी का नाम लिली है।	उपन्यास में नायिका मालती देवी और फिल्म में आरती देवी है।
इलेक्शन जीतने के लिए राजनीतिक तंत्रों का प्रयोग कर इलेक्शन में जीत जाती है।	उपन्यास का अंत में दोनों एक दूसरे से कभी न मिलने का आशा करते है लेकिन फिल्म में दोनों एक दूसरे के साथ ज़िन्दगी बिताने का फ़ैसला करते है।

पति पत्नी और वह – पति पत्नी और वो : पति पत्नी और वह' उपन्यास के आधार पर भारतीय समकालीन सामाजिक फिल्म 'पति पत्नी और वो' 1978 में बनी। शारदा और रंजीत वैवाहिक सुख में जी रहे पति पत्नी है, उनका एक बेटा भी है। रंजीत अपनी नई सचिव निर्मला की ओर आकर्षित हो जाता है। वह एक ईमानदार लड़की है और शारदा से कई ज्यादा खूबसूरत हैं। वह रंजीत के इरादों और उसकी शादीशुदा जिंदगी के बारे में कुछ भी नहीं जानती। रंजीत शुरू में उसके बारे में अपने विचारों से परेशान होता है, लेकिन अंत में हार मान लेता है।

वह एक कैंसर पीड़ित पत्नी का दुखी पति होने का दावा करता है, जिस कारण निर्मला उसके लिए खेद महसूस करती है। एक दिन शारदा को रंजीत की जेब में निर्मला का रूमाल मिलता है जिस पर लिपस्टिक के निशान लगी हुई थी। शारदा अनचाहे ही पति द्वारा दिए गए सफाई पर विश्वास करती। वह टूट जाती है जब रंजीत को निर्मला के साथ एक होटल में देखती है। वह तस्वीरें लेती है और उसकी और निर्मला की जासूसी करने लगती है। पर्याप्त सबूत मिलने के पश्चात वह एक पत्रकार के रूप में पेश होकर चुपके से निर्मला से मिलती है। निर्मला सोचती है कि शारदा उसे ब्लैकमेल करेगी, लेकिन शारदा उसे आश्वस्त करती है कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी। शारदा कहती है कि तलाक के कागजात जल्द ही उसे भेज दी जाएगी। रंजीत अपने दोस्त को फोन करके बोलता है कि निर्मला ने उसके बारे में शारदा से कुछ दुर्भावनापूर्ण झूठ कहा है।

शारदा ने रंजीत को सबूतों की मदद से झूठा साबित कर लेती है। शारदा रंजीत से उसे या निर्मला को चुनने के लिए कहती है। रंजीत चुपचाप निर्मला को कुछ पैसे देता है लेकिन ईमानदार निर्मला शारदा को पैसे लौटा देती है। शारदा रंजीत को छोड़ जाने की फैसला लेती है और निर्मला इस्तीफा दे देती है। शारदा रंजीत से आखिरी बार मिलने जाती है तो उसका मासूम बेटा को देख शारदा रंजीत को एक और मौका देने का फैसला करती है। एक और सचिव कार्यालय में शामिल हो जाती है तो रंजीत एक बार फिर अपनी हरकतों को संभाल नहीं पता। रंजीत का उसे चेतावनी देता है तो वह मानकर रंजीत पीछे हट जाता है।

इस फिल्म के लिए कमलेश्वर को सर्वश्रेष्ठ पटकथा का, संजीव कुमार को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता एवं रंजीता कौर को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का का फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

पहले कमलेश्वर इलाहाबाद रेडियो में स्टाफ आर्टिस्ट के रूप में काम करते थे और फिर सन 1958 में दूरदर्शन में नियुक्त हुए। इसी बीच उन्होंने दूरदर्शन की नौकरी उन्होंने छोड़ दी थी और फिर सन 1980 में इंदिरा गांधी के बुलाने पर फिर से दूरदर्शन में डायरेक्टर जनरल के पद पर स्थापित हो गए। कमलेश्वर के कार्यक्रम 'परिक्रमा' भारतीय टेलीविजन की उपलब्धि है। "वह कार्यक्रम है ही नहीं, घटनाएं हैं। अब बार-बार कमलेश्वर के कार्यक्रमों के बारे में लिखने और कहने के लिए कुछ शेष ही नहीं रह गया।"

"राजेंद्र यादव के 'सारा आकाश' की पटकथा और संवाद खुद कमलेश्वर ने ही लिखा था। वे खुद पटकथा एवं संवाद लिखते थे तथा दूसरों की कहानी उपन्यासों पर पटकथा एवं संवाद भी लिखा करते थे। 'अमानुष' का संवाद स्वयं कमलेश्वर ने ही लिखा। कमलेश्वर की सबसे बड़ी ताकत उनकी 'ओरिजिनालिटी' एवं 'ताजगी' है।"

सिनेमा में संस्कृति को प्रभावित कर हमारे विश्वासों और मूल्यों को आकार देने की शक्ति है, जो कल्पना और वास्तविकता के बीच की रेखा को धुंधला कर देता है। कमलेश्वर की सिनेमा सामाजिक मानदंडों पर स्थायी प्रभाव छोड़ने में सहायक रही हैं। फिल्म लोगों के मूल्यों और विश्वासों को आकार देने में तथा अपने हक के प्रति जागरूग होने में मदद करते हैं। फिल्मों में सामाजिक अन्याय और हाशिए के समुदायों पर प्रकाश डालने, इन लोगों को जागरूक बनाने और सामाजिक समानता पर जोर देने की क्षमता रहती है। कई फिल्मे एसे भी है जो समाज को कई प्रकार के संदेश प्रदान करती है। फिल्म वर्तमान और अतीत में समाज का प्रतिबिंब रहा है और कभी -कभी यह समाज को नेतृत्व करती है।

निष्कर्ष—स्वातंत्र्योत्तर काल के सफल हिन्दी मीडिया, टेलीविजन एवं फिल्मों से संबंधित साहित्यकारों में सबसे ख्याति प्राप्त साहित्यकार है कमलेश्वर। जिन्होंने साहित्यकार को फिल्मी जगत में एक नया मूल्य एवं प्रतिष्ठा दिलाने का अत्यंत प्रयास किया। सिनेमा को मनोरंजन के स्तर से उठाकर अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का साहस भी कमलेश्वर ने किया। अपनी ईमानदारी, क्षमता, ताकत एवं वक्त का पर्याप्त जानकारी होने के कारण वह सदा निडर रहते। अपने व्यक्तित्व के ज़रिये उन्होंने हिन्दी साहित्य एवं फिल्म जगत दोनों को एक नवीन दिशा एवं मर्यादा प्रदान किया है।

******

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पुरुषोत्तम कुंदे - सिनेमा का सौन्दर्यशास्त्र, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2015
2. विनोद भारद्वाज – सिनेमा : कल, आज, कल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
3. डॉ.के.पी. जया - कथाकार कमलेश्वर, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा-001, 2007
4. मधुकर सिंह - कमलेश्वर, शब्दाकार, २००३, दिल्ली- 06
5. https://www.google.com/amp/s/www.thelallantop.com/amp/news/post/story-of-film-aandhi-which-was-banned-during-emergency-by-indira-gandhi